डॉ.मैत्रीसिंह
सहप्राध्यापक
हिंदीविभाग,महात्माज्योतिबा
फुले कला महाविद्यालय,
कलबुर्गी,कर्नाटक.
दूरभाष:9448583688

भाषा सह अस्तित्व और अंत:संबंध

भारत एक बहुभाषी देश हैं। यहां कई भाषाएं बोली जाती हैं। भारत का साहित्य विभिन्न भाषाओं से सुसज्जित आकर्षक भवन हैं। भारतीय भाषाओं में रक्त संबंध की तरह अंतर्संबंध प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता हैं,व्याकरण की दृष्टि से कई समानताएं होती हैं। जिस प्रकार एक परिवार के सदस्यों के नैन नक्श देख कर उनका परिचय सरल होता जाता हैं वैसे ही देवनागरी से जन्मी दक्षिण भाषाओं की लिपी, उच्चारण में साम्यता दिखती हैं। विचारों के आदान प्रदान के लिए भाषा का होना आवश्यक हैं। संस्कृत सभी भाषाओं की जननी मानी जाती हैं। वेद, पुराण पढ़ने के आकांक्षी विदेशी आजकल संस्कृत सीखने लगे हैं। वैदिक काल में संस्कृत बोल चाल की भाषा हुआ करती थी। संस्कृत भाषा में विद्वान और विदुषियां शास्त्रार्थ किया करती थीं। इस प्रकार भाषा संप्रेषण का माध्यम ही नहीं जीवन का अभिन्न अंग हैं। किसी भी भाषा में निपुणता पाने के चार आधार स्तंभ बताए गए हैं 1.लिखना, 2.पढ़ना, 3.बोलना, 4.सुनना । भाषा शिक्षण में इन चार सोपानों का निरंतर अभ्यास किसी भी भाषा में पारंगत होने के लिए काफ़ी हैं। अच्छी भाषा पढ़ने पर ही अच्छी भाषा लिखी जा सकती हैं। हम शिक्षा क्षेत्र से जुड़े हैं, शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया हैं और शिक्षक का काम देना और देते रहना हैं। जीवन की प्रयोगशाला में भाषा के साथ नित नए प्रयोग उसके अस्तित्व को उपजाऊ बनाती हैं,भाषा की उर्वरा शक्ति को बढ़ाती हैं। वैश्वीकरण के इस युग में भाषा सेतु का काम करती हैं। भारत के वर्तमान प्रधान मंत्री मोदीजी जहां कहीं भी जाते हैं वहीं की भाषा में अभिवादन करते हैं तात्पर्य हैं कि भाषा संबंध को प्रेम रस सी सींचतीहैंऔरउसकाहोनाअनिवार्यहैं। भाषाओं की गहरी जानकारी शब्द कोश द्वारा ग्रहित की जाती हैं। संबंधित भाषा के विश्व कोश का अध्ययन नवाचार को बढ़ावा देता हैं।

विभिन्न संस्थाओं, पत्रिकाओं द्वारा भाषा समुदाय और संस्कृतियों को एक बिंदु पर जोड़ने का प्रयत्न होता रहा हैं। भाषा की एकता और क्षेत्रीय भाषा की विशेषता को महत्व दिया जाना चाहिए, उनके अनुवाद , प्रकाशन से भाषा की लोकप्रियता सिद्ध हो सकती हैं।

आदिम सभ्यता के इतिहास में यह देखा जाता हैं कि पशु पक्षियों की बोली के द्वारा मनुष्य ने भाषा की संरचना की। मानव मन के उद्गार भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त होते हैं। पानी का तेज बहाव अपना रास्ता खोज लेता हैं ठीक उसी तरह भाषा भी निरंतर जन मानस में प्रवाहित होती रहती हैं। कहा जाता हैं बहता पानी स्वच्छ होता हैं वहीं रुका हुआ पानी अपने में कई दोष लिए होता हैं इसी तरह भाषा के नित नए अविष्कार होते रहते हैं। स्वदेश और विदेशों में भी भाषा के संबंध में शोध अनुसंधान किए जा रहे हैं।

भाषा के सभी पक्षों पर विस्तृत अध्ययन करने पर पता चलता हैं कि भाषा मौखिक व लिखित होने के अतिरिक्त संवेदनात्मक होती हैं। भाषा और साहित्य जीवन के साथ साथ वैचारिक आयाम को साथ लेकर चलते हैं। भाषा के साथ उसकी गुणवत्ता मानदंड की चुनौतियां होती हैं। भारतीय रेल, भारतीय डाक , बैंक, आकाशवाणी, दूरदर्शन, समाचार चैनल पर भाषा संबंधी कौशल सीखा जा सकता हैं यह तीव्र गति से फैलने वाला व्यवसाय हैं।

चिकित्सा क्षेत्र में औषधि से कहीं अधिक भाषा द्वारा रोग का निदान किया जाता हैं। काउंसलिंग इसी तरह की चिकित्सा पद्धति हैं। भाषा एक शस्त्र हैं। इस संदर्भ में रहीम का दोहा सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं

सतसैया के दोहरे ज्यों नाविक के तीर ।
देखन में छोटे लगे घाव करे गंभीर ।।

यही कारण हैं कि हिंदी भाषा के प्रसिद्ध रचनाकार प्रेमचंद को "कलम के सिपाही" कहा जाता हैं। कवि या लेखक अपनी कलम के बल पर अनगिनत लोगों का मार्गदर्शन करता हैं। जो सामर्थ्य कलम में हैं उसकी बराबरी तलवार से भी नहीं की जा सकती हैं। प्रसिद्ध एकांकी "भोर का तारा" के पात्र शेखर, माधव के जरिए एकांकीकार ने कलम की ताकत का उत्तम उदाहरण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया हैं। शत्रु आक्रमण करने बढ़ा आ रहा हैं शेखर कवि अपनी देश प्रेम की कविता से वीरों को शत्रु का सामना करने की प्रेरणा देता हैं। इतिहास गवाह हैं हम भारतीयों ने 200 वर्ष की पराधीनता से स्वतंत्रता केवल सत्य, अहिंसा के बल पर नहीं पाई। देश के प्रत्येक कोने से प्राणों की परवाह न करते हुए हर संभव प्रयास हर एक ने किए। हर भाषा का इतिहास साक्षी हैं साहित्य की प्रत्येक विधा में खुली हवा में सांस लेने की बात का गहराई से वर्णन मिलता हैं। माखनलाल चतुर्वेदी की कविता "पुष्प की अभिलाषा" यह सोचने पर विवश करती हैं कि एक पुष्प अल्पायु लेकर इस संसार में आता हैं, इस जीवन को वह व्यर्थ नहीं करना चाहता, वह देश पर मर मिटने वाले सैनिक के पैर तले कुचला जाना अपना सौभाग्य मानता हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता " झांसी की रानी" भाषा का जीता जागता उदाहरण हैं जो आज़ादी का सजीव चित्रण करता हैं।

"खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी"

इस प्रकार सभी भारतीय भाषाओं का साहित्य स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। हिंदी साहित्य का इतिहास भारतेंदु हरिश्चंद्र की रचनाओं द्वारा प्रकाश में आता हैं। ब्रिटिश सरकार की पाबंदियों के बाद भी ये कलम के वीर सिपाही अपने कदम आगे की ओर बढ़ाते रहें। इस सफलता का मुख्य कारण उनकी ओजस्वी भाषा थी। उनकी हार न मानने की प्रवृत्ति थी। स्थानीय भाषा में लेखन का मुख्य उद्देश्य था रचनाकार समाज के हर आदमी तक अपनी बात रखना चाहता था। भाषा सरल, सहज होने पर वह और भी मधुर होती हैं। जिसके कारण आपस में सहमति बनती जाती हैं इस प्रकार हमारे नरम और गरम दल के नेता किसी सीमा तक एकमत हुए। आज हम भाषा को लेकर विवाद करते हैं कि हिंदी दक्षिणवासियों पर लादी जा रही हैं किंतु सच यह हैं कि हम अंग्रेजी का मोह छोड़ नहीं पा रहे हैं। यह आश्चर्य चकित करने वाला तथ्य हैं कि विदेशी संस्कृत और हिंदी पढ़ने के आकांक्षी हैं। हम भावों की अभिव्यक्ति के बजाए भाषा की सीमा में विवाद खड़े कर रहे हैं जो अनुचित हैं।

भाषा को पाठक की संवेदना, रुचि के अनुरूप संस्मरण, आलोचनात्मक मूल्यांकन, नाटक, लेख, कविताएं, कहानियां, उपन्यास द्वारा साहित्य की नई प्रवृत्तियों से पुष्पित व पल्लवित किया जाना वर्तमान समय की अनिवार्यता हैं। प्रतिष्ठित रचनाकारों के नाम से नए लेखकों को साहित्य सेवा के लिए सम्मानित करते हुए उनकी सृजनात्मक शक्ति को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। नवाचार के लिए युवा वर्ग को प्रोत्साहन करते हुए भाषाओं के साहित्य दर्पण को नई दिशा की ओर अग्रसर किया जाना चाहिए। क्योंकि किसी राष्ट्र की भाषा वहां की संस्कृति को प्रतिबिंबित करती हैं, भाषा राष्ट्र के अनगिनत समाजों की अनमोल धरोहर व विरासत होती हैं।

आधुनिक तकनीक ने भाषा शिक्षा पद्धति को और भी सरल बना दिया हैं। मोबाइल, कंप्यूटर जीवन की अनिवार्यता बन गए हैं। व्यवसायिक दृष्टि से देखा जाए तो वर्तमान समय में भाषा टाइपिस्ट की मांग बढ़ी हैं, इसके कारण कई लोग रोजगार पा सकते हैं, अनुवाद ने वैश्वीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं,आज दुभाषिए का महत्व हमसे छिपा नहीं हैं भाषा के विद्वान कल भी आवश्यक थे आगे भी रहेंगे।

बहुत दूर गए हुए किसी जीवन में से ही निकल कर आती हैं
एक भाषा अपने शब्द खोजने के लिए फड़फड़ाती हैं

जब दिन जाता हुआ होता है रात आती हुई होती हैं,
गाता न हो कोई बजाता न हो, तब भी वह गूंजती रहती हैं। _मंगलेश डबराल
(राग मारवा)

भाषा के व्यवसायिक कौशल की सीमा प्रिंट की हुई किताबों तक नहीं हैं। आज शिक्षितों का एक बड़ा वर्ग डिजिटल टेक्स्ट को आदत बना चुका हैं। इंटरनेट, सोशल मीडिया, 4 जी से वेब रीडिंग में बढ़ोतरी हुई हैं। फेस बुक के माध्यम से खुद को अभिव्यक्त करने की ललक ने सीमित शब्दों के ब्लॉग लेखन को पीछे धकेल दिया हैं। आज डिजिटल स्लेट लोकप्रिय हैं जिन्हें चिन्हित और शेयर करना सरल हैं। हिंदी भाषी भी डिजिटल रीडिंग के जरिए व्यवसाय के नए रास्ते खोल रहे हैं। वेबसाइट को अपडेट किया जा रहा हैं। ई संस्करण की सक्रियता बढ़ी हैं। प्रिंट की दुनिया में जहां प्रकाशकों का दबदबा था वे रचना को सर्वाधिकार सुरक्षित के नाम पर गिरवी रखते थे, अब सेल्फ पब्लिशिंग से धन और यश दोनों कमाए जा सकते हैं। सबसे बड़ी सुविधा पुस्तकों को लेकर घूमने के बजाय मोबाइल में सभी एप हम पा सकते हैं। आज लेखक प्रकाशक की तस्वीर पूरी तरह बदल गई हैं। प्रकाशक की एक हां की प्रतीक्षा लेखक को नहीं करनी पड़ती। प्रकाशक द्वारा लेख को नकारने, रचना लौटाने का प्रश्न ही नहीं उठता। आज लेखकों के लिए अनुवाद, ऑडियो, वीडियो, वेब सीरीज, फिल्म जैसी अपार संभावनाएं बढ़ रही हैं तथा आने वाले दिनों में डिजिटल टेक्स्ट की दुनिया निश्चित रूप से बदलेगी। किताब का भौतिक और डिजिटल स्वरूप सुरक्षित रहेगा और किताब का सपना भी पलता रहेगा। आखिरकार कोई भी पुस्तक अपने उत्तम भाषिक बर्ताव, नएपन के कारण पाठकों को पसंद आती हैं और बिकती हैं। इस तरह लेखक अब प्रकाशक को अपनी शर्तों व करार से लेखक गैलेक्सी में जाने की अपनी पसंद तय कर सकते हैं अपनी राह खुद बना सकते
हैं।